'शिव' ग्रन्थमाला : ग्रन्थाङ्क-७१

सप्रयोग-महाविद्या-स्तोत्रम्

'शिवदत्ती' हिन्दीटीका—विभूषितम्

(स्तोत्र-कवचादि-विविध-विधानसहितं च)

देवरिया-जनपदान्तर्गत-'मझौली राज्य' (सम्प्रति वाराणसी) वास्तव्येन

व्याकरणाचार्य-साहित्यवारिधि-तन्त्ररत्नाकर-

आचार्य-पण्डित-श्रीशिवदत्तमिश्रशास्त्रिणा

संशोध्य सम्पादितम्

*

प्रकाशक

श्री ठाकुर प्रसाद पुस्तक भण्डार

M.Katyayana

कचौड़ीगली, वाराणसी-२२१००१

सन् १९९५ ई०

फोन नं. - ३२२५४३

[मूल्यम् - ७/-

प्रकाशक :

श्री ठाकुर प्रसाद पुस्तक भण्डार

कचौड़ीगली, वाराणसी-१

फोन : दुकान : ३२२५४३

आवास : ३२२४७१

सम्पादक :

आचार्य पण्डित शिवदत्त मिश्र शास्त्री

परिवर्धित संस्करण : २०५२

मूल्य : सात रुपये

मुद्रक :

भारत प्रेस

कचौड़ीगली, वाराणसी-१

दो शब्द

पराम्बा जगदम्बा महाविद्या की उपासना इस कलिकाल में सर्व-श्रेष्ठ, महत्त्वपूर्ण एवं शीघ्र फलदायक है। समस्त विघ्न-बाधाओं तथा अनिष्ट ग्रहों की शान्ति एवं शत्रु-विनाश के लिए प्रस्तुत 'स-प्रयोग-महाविद्यास्तोत्र' बहुत ही उपयोगी ग्रन्थ है। इसके द्वारा स्तोत्रपाठ, जप एवं मन्त्रानुष्ठान से शीघ्रातिशीघ्र कार्य सिद्ध होता है, इसमें संशय नहीं। घर में भूत-प्रेतादि-विघ्न-बाधाओं के लिए तो यह रामबाण है। इसमें स्तोत्र, कवच, होम-सामग्री आदि विषय भी दे देने से इसकी उपयोगिता और भी अत्यधिक बढ़ गयी है।

चिरकाल से मेरे द्वारा सम्पादित 'सप्रयोग-महाविद्यास्तोत्र' को पाठक गण बड़ी उत्सुकता के साथ अन्वेषण करते थे। आज चिरप्रतीक्षित वही पुस्तक आपके हाथों में प्रस्तुत है। आशा है, पूर्व संस्करणों की भाँति प्रस्तुत परिवर्धित संस्करण भी साधकों के लिए अत्यधिक उपयोगी सिद्ध होगा।

प्रस्तुत संस्करण विशुद्ध मुद्रण एवं अनेक विशेषताओं के साथ सर्वाङ्ग सुन्दर प्रकाशित किया गया है। महाविद्या उपासना-प्रेमी साधकों का इससे महान् उपकार होगा।

–शिवदत्त मिश्र शास्त्री

रथयात्रा

३० जून, १९९५ ई०

सी. के. ५/२६ए., भिखारीदास लेन

(ठठेरी बाजार), वाराणसी-१

श्रीमहाविद्यायै नमः

आचार्य-पण्डित-श्रीशिवदत्तमिश्रशास्त्रि-संस्कृतं

सप्रयोग-महाविद्या-स्तोत्रम्

'शिवदत्ती' हिन्दी-टीका-सहितम्

महाविद्यां प्रवक्ष्यामि महादेवेन निर्मिताम् ।
उत्तमां सर्वविद्यानां सर्वभूतवशङ्करीम् ॥

सङ्कल्पः **- ॐ तत्सदद्याऽमुकमासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरे अमुकगोत्रः अमुकशर्माऽहं मम (अथवाऽमुक-यजमानस्य) गृहे उत्पन्न-भूत-प्रेत-पिशाचादि-सकल-दोषशमनार्थं झटित्यारोग्यताप्राप्त्यर्थं च महाविद्यास्तोत्रस्य पाठं करिष्ये ।**

शिवदत्ती

समस्त चराचर प्राणिमात्र को अपने अधीन करने वाली , महादेव-द्वारा निर्मित , सभी विद्याओं में उत्तम महाविद्या का मैं निरूपण करता हूँ।

इस महाविद्या के पाठ करने वाले को चाहिए कि , सर्व-प्रथम आचमन , प्राणायाम कर पूर्व मुख बैठ दाहिने हाथ में , जल , अक्षत , पुष्प लेकर 'ॐ तत्सदद्याऽमुकमासे अमुकपक्षे' से लेकर 'महाविद्यास्तोत्रस्य पाठं करिष्ये' पर्यन्त संकल्प-वाक्य पढ़कर भूमि पर जल छोड़ दे।

विनियोगः **- ॐ अस्य श्रीमहाविद्यास्तोत्रमन्त्रस्याऽर्यमा ऋषिः, कालिका देवता, गायत्री छन्दः, श्रीसदाशिवदेवताप्रीत्यर्थे मनोवाञ्छितसिद्ध्यर्थे जपे पाठे च विनियोगः।**

ध्यानम्

उद्यच्छीतांशु-रश्मि-द्युतिचय-सदृशीं फुल्लपद्मोपविष्टां
वीणा-नागेन्द्र-शङ्खा-ऽऽयुध-परशुधरां दोर्भिरीड्यैश्चतुर्भिः ।
मुक्ताहारांशु-नाना-मणियुत-हृदयां सीधुपात्रं वहन्तीं
वन्देऽभीड्यां भवानीं प्रहसितवदनां साधकेष्टप्रदात्रीम् ॥

तदनन्तर 'ॐ अस्य श्रीमहाविद्यास्तोत्रमन्त्रस्य' से 'जपे पाठे च विनियोगः' तक विनियोग-वाक्य पढ़कर भूमि पर जल छोड़ दे।

तत्पश्चात् 'उद्यच्छीतांशु' से 'साधकेष्टप्रदात्रीम्' पर्यन्त श्लोक पढ़कर महाविद्या का ध्यान करे। श्लोकार्थ यह है—साधक के समस्त मनोरथों को पूर्ण करने वाली , उदीयमान चन्द्र-किरणों के समूह के समान कान्ति वाली , विकसित कमल पर आसीन (बैठी हुई) , अपने चारों हाथों में वीणा , सर्पराज , शंख , परशु धारण की हुई , अपने हृदय में अनेक मणियों से युक्त , मोती की माला से सुशोभित , चषक (मद्य)-पात्र ली हुई , प्रसन्नमुखी , सर्वश्रेष्ठ महाविद्या रूप भवानी का मैं अभिवादन करता हूँ।

महा . ६ स्तोत्र.

ॐ कुलकरीं गोत्रकरीं धनकरीं पुष्टिकरीं वृद्धिकरीं हलाकरीं सर्वशत्रुक्षयकरीम् उत्साहकरीं बलवर्द्धिनीं सर्ववज्रकायाचितां सर्वग्रहोच्चाटिनीं पुत्र-पौत्राऽभिवर्द्धिनीमायुरारोग्यैश्वर्याभिवर्द्धिनीं सर्वभूतस्तम्भिनीं द्राविणीं मोहिनीं सर्वाकर्षिणीं सर्वलोकवशङ्करीं सर्वराजवशङ्करीं सर्वयन्त्र-मन्त्र-प्रभेदनीमेकाहिकं द्व्याहिकं त्र्याहिकं चातुर्थिकं पाञ्चाह्निकं साप्ताहिकमार्द्धमासिकं मासिकं षाण्मासिकं सांवत्सरिकं वैजयन्तिकं पैत्तिकं वातिकं श्लैष्मिकं सान्निपातिकं कुष्ठरोग-मुखरोग-गण्डरोग-प्रमेहरोग-शुल्काविशिक्षयकरीं विस्फोटकादि-विनाशनाय स्वाहा। बेतालादिज्वर-रात्रिज्वर-दिवसज्वरा-ऽग्निज्वर-प्रत्यग्निज्वर-राक्षसज्वर-पिशाचज्वर-ब्रह्मराक्षसज्वर-प्रस्वेदज्वर-विषमज्वर-त्रिपुरज्वर-मायाज्वरा-ऽऽभिचारिकज्वर-वष्टिज्वर-स्मरादिज्वर-प्रयोगादिविनाशनाय स्वाहा। सर्वव्याधिविनाशनाय स्वाहा। सर्वशत्रुविनाशनाय स्वाहा। अक्षिशूल-कुक्षिशूल-

तदनन्तर श्रद्धा-भक्तिपूर्वक दत्तचित्त हो, 'ॐ कुलकरीं गोत्रकरीं धनकरीं' से प्रारम्भकर 'प्रेतशान्तिर्विशेषतः' पर्यन्त स्तोत्र का पाठ करे।

६

महा . ७ स्तोत्र.

कर्णशूल-घ्राणशूलोदरशूल-गलशूल-गण्ड़शूल-दन्तशूल-पादशूल-पादार्द्धशूल-विनाशनाय स्वाहा। ॐ सर्वव्याधिविनाशनाय स्वाहा। ॐ सर्वशत्रुविनाशनाय स्वाहा। ॐ सर्वस्फोटक-सर्वक्लेशविनाशनाय स्वाहा। ॐ आत्मरक्षा परमात्मरक्षा मित्ररक्षा-ऽग्निरक्षा-प्रत्यग्निरक्षा-परगतिवातोरक्षा तेषां सकलबन्धाय स्वाहा। ॐ हरदेहिनी स्वाहा। ॐ इन्द्रदेहिनी स्वाहा। ॐ स्वस्य ब्रह्मदण्डं विश्रामय। ॐ विश्रामय विष्णुदण्डम्। ॐ ज्वर-ज्वरेश्वरकुमार-दण्डम्। ॐ हिलि मिलि मायादण्डम्। ॐ नित्यं नित्यं विश्रामय विश्रामय वारुणी शूलिनी गारुडीरक्षा स्वाहा।

गङ्गादि-पुलिने जाता पर्वते च वनान्तरे।
रुद्रस्य हृदये जाता विद्याऽहं कामरूपिणी ॥

गंगा, यमुना, सरस्वती आदि में, हिमालय, बिन्ध्य आदि पर्वत में, नैमिषारण्य, दण्डकारण्य आदि के मध्य एवं आशुतोष भगवान् रुद्रके हृदयमें, मैं स्वच्छन्द रूपसे विद्यास्वरूप उत्पन्न हुई।

७

ज्वल ज्वल देहस्य देहेन सकल-लोहपिङ्गिलि कटि-मपुरी किलि किलि किलि महादण्ड कुमारदण्ड नृत्य नृत्य विष्णुवन्दित-हंसिनी शङ्खिनी चक्रिणी गदिनी शूलिनी रक्ष रक्ष स्वाहा ।

बीजमन्त्राः

ॐ ह्रां स्वाहा । ॐ ह्रां ह्रां स्वाहा । ॐ ह्रीं स्वाहा । ॐ ह्रीं ह्रीं स्वाहा । ॐ हूं स्वाहा । ॐ हूं हूं स्वाहा । ॐ हें स्वाहा । ॐ हें हें स्वाहा । ॐ हैं स्वाहा । ॐ हैं हैं स्वाहा । ॐ हों स्वाहा । ॐ हों हों स्वाहा । ॐ हौं स्वाहा । ॐ हौं हौं स्वाहा । ॐ हं स्वाहा । ॐ हं हं स्वाहा । ॐ हः स्वाहा । ॐ हः हः स्वाहा । ॐ क्रां स्वाहा । ॐ क्रां क्रां स्वाहा । ॐ क्रीं स्वाहा । ॐ क्रीं क्रीं स्वाहा । ॐ क्रूं स्वाहा । ॐ क्रूं क्रूं स्वाहा । ॐ क्रें स्वाहा । ॐ क्रें क्रें स्वाहा । ॐ क्रैं स्वाहा । ॐ क्रैं क्रैं स्वाहा । ॐ क्रों स्वाहा । ॐ क्रों क्रों स्वाहा । ॐ क्रौं स्वाहा । ॐ क्रौं क्रौं स्वाहा । ॐ क्रः स्वाहा । ॐ क्रः क्रः स्वाहा । ॐ कँ स्वाहा । ॐ कँ कँ स्वाहा । ॐ खँ स्वाहा । ॐ खँ खँ स्वाहा । ॐ गँ स्वाहा । ॐ गँ गँ स्वाहा । ॐ घँ स्वाहा । ॐ घँ घँ स्वाहा । ॐ ङँ स्वाहा ।

ॐ ङँ ङँ स्वाहा । ॐ चँ स्वाहा । ॐ चँ चँ स्वाहा । ॐ छँ स्वाहा । ॐ छँ छँ स्वाहा । ॐ जँ स्वाहा । ॐ जँ जँ स्वाहा । ॐ झँ स्वाहा । ॐ झँ झँ स्वाहा । ॐ ञँ स्वाहा । ॐ ञँ ञँ स्वाहा । ॐ टँ स्वाहा । ॐ टँ टँ स्वाहा । ॐ ठँ स्वाहा । ॐ ठँ ठँ स्वाहा । ॐ डँ स्वाहा । ॐ डँ डँ स्वाहा । ॐ ढँ स्वाहा । ॐ ढँ ढँ स्वाहा । ॐ णँ स्वाहा । ॐ णँ णँ स्वाहा । ॐ तँ स्वाहा । ॐ तँ तँ स्वाहा । ॐ थँ स्वाहा । ॐ थँ थँ स्वाहा । ॐ दँ स्वाहा । ॐ दँ दँ स्वाहा । ॐ धँ स्वाहा । ॐ धँ धँ स्वाहा । ॐ नँ स्वाहा । ॐ नँ नँ स्वाहा । ॐ पँ स्वाहा । ॐ पँ पँ स्वाहा । ॐ फँ स्वाहा । ॐ फँ फँ स्वाहा । ॐ बँ स्वाहा । ॐ बँ बँ स्वाहा । ॐ भँ स्वाहा । ॐ भँ भँ स्वाहा । ॐ मँ स्वाहा । ॐ मँ मँ स्वाहा । ॐ यँ स्वाहा । ॐ यँ यँ स्वाहा । ॐ रँ स्वाहा । ॐ रँ रँ स्वाहा । ॐ लँ स्वाहा । ॐ लँ लँ स्वाहा । ॐ वँ स्वाहा । ॐ वँ वँ स्वाहा । ॐ शँ स्वाहा । ॐ शँ शँ स्वाहा । ॐ षँ स्वाहा । ॐ षँ षँ स्वाहा । ॐ सँ स्वाहा । ॐ सँ सँ स्वाहा । ॐ हँ स्वाहा । ॐ हँ हँ स्वाहा । ॐ क्षँ स्वाहा । ॐ क्षँ क्षँ स्वाहा।

ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा । ॐ लेषाय स्वाहा । ॐ गणेश्वराय स्वाहा । ॐ दुर्गे महाशक्तिक-भूत-प्रेत-पिशाच-राक्षस-ब्रह्मराक्षस-सर्वबेताल-वृश्चिकभय-विनाशनाय स्वाहा । ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा । ॐ हाँ ह्रीं हूँ हें हैं हों हौं हँ हः स्वाहा । ॐ क्राँ क्रीं क्रूँ क्रें क्रैं क्रों क्रौं क्रँ क्रः स्वाहा । ॐ शीं शिवाय स्वाहा । ॐ सूं सूर्याय स्वाहा । ॐ सों सोमाय स्वाहा । ॐ मं मङ्गलाय स्वाहा । ॐ बुं बुधाय स्वाहा । ॐ बृं बृहस्पतये स्वाहा । ॐ शुं शुक्राय स्वाहा । ॐ शं शनैश्चराय स्वाहा । ॐ रां राहवे स्वाहा। ॐ कें केतवे स्वाहा । ॐ महाशान्तिक-भूत-प्रेत-पिशाच-राक्षस-ब्रह्मराक्षस-बेताल-वृश्चिकभय-विनाशनाय स्वाहा । ॐ सिंह-शार्दूल-गजेन्द्र-ग्राह-व्याघ्रादि-मृगान् बध्नामि स्वाहा । ॐ शस्त्रं बध्नामि स्वाहा । ॐ अस्त्रं बध्नामि स्वाहा । ॐ वायुं बध्नामि स्वाहा । ॐ गतिं बध्नामि स्वाहा । ॐ आशां बध्नामि स्वाहा । ॐ सर्वं बध्नामि स्वाहा। ॐ सर्वजन्तुं बध्नामि स्वाहा । ॐ बन्ध बन्ध मोचनं कुरु कुरु स्वाहा ।

दिग्बन्धनम्

ॐ नमो भगवते महेन्द्रादिशायामैरावतारूढं वज्रहस्तं परिवार-सहितं दिग्देवताधिपतिमैन्द्रमण्डलं बध्नामि स्वाहा । ॐ ऐन्द्रमण्डलं बन्ध-बन्ध रक्ष रक्ष

माचल माचल माक्रम्य माक्रम्य स्वाहा । ॐ हाँ ह्रीं हूँ हैं हौं हः स्वाहा । ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा । ॐ भैरवाय स्वाहा । ॐ नमो गणेश्वराय स्वाहा । ॐ नमो दुर्गायै नमः स्वाहा । ॐ अग्निदिशायां मृगारूढं शक्तिहस्तं परिवारसहितं दिग्देवताधिपतिमग्निमण्डलं बध्नामि स्वाहा । ॐ अग्निमण्डलं बन्ध बन्ध रक्ष रक्ष माचल माचल माक्रम्य माक्रम्य स्वाहा । ॐ हाँ ह्रीं हूं हैं हौं हः स्वाहा । ॐ क्राँ क्रीं क्रूँ क्रैं क्रौं क्रः स्वाहा । ॐ नमो भैरवाय स्वाहा। ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा । ॐ नमो गणेश्वराय स्वाहा । ॐ नमो दुर्गायै नमः स्वाहा । ॐ दक्षिणदिशायां महिषारूढं कृष्णवर्णं दण्डहस्तं परिवारसहितं दिग्देवताधिपतिं यममण्डलं बध्नामि स्वाहा । ॐ यममण्डलं बन्ध बन्ध रक्ष रक्ष माचल माचल माक्रम्य माक्रम्य स्वाहा । ॐ हां ह्रीं हूं हैं हौं हः स्वाहा । ॐ क्राँ क्रीं क्रूँ क्रैं क्रौं क्रः स्वाहा । ॐ नमो भैरवाय स्वाहा । ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा । ॐ नमो गणेश्वराय स्वाहा । ॐ नमो दुर्गायै नमः स्वाहा । ॐ नैर्ऋत्यदिग्दिशायां प्रेतारूढं खड्गहस्तं परिवारसहितं दिग्देवताधिपतिं नैर्ऋत्यमण्डलं बध्नामि स्वाहा । ॐ नैर्ऋत्यमण्डलं बन्ध बन्ध, रक्ष रक्ष, माचल माचल, माक्रम्य माक्रम्य स्वाहा । ॐ हाँ ह्रीं हूँ हैं हौं हः स्वाहा ।

ॐ क्राँ क्रीं क्रूँ क्रैं क्रौं क्रः स्वाहा । ॐ पश्चिमदिशायां मकरारूढं पाशहस्तं परिवारसहितं दिग्देवताधिपतिं वरुणमण्डलं बध्नामि स्वाहा । ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा । ॐ भैरवाय स्वाहा । ॐ नमो गणेश्वराय स्वाहा । ॐ नमो दुर्गायै नमः स्वाहा । ॐ वरुणमण्डलं बन्ध बन्ध, रक्ष रक्ष, माचल माचल, माक्रम्य माक्रम्य स्वाहा । ॐ हाँ ह्रीं हूँ हैं हौं हः स्वाहा । ॐ क्राँ क्रीं क्रूँ क्रैं क्रौं क्रः स्वाहा । ॐ वायव्यदिशायां मृगारूढं धनुर्हस्तं परिवारसहितं दिग्देवताधिपतिं वायव्यमण्डलं बध्नामि स्वाहा । ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा । ॐ भैरवाय स्वाहा । ॐ नमो गणेश्वराय स्वाहा । ॐ नमो दुर्गायै नमः स्वाहा । ॐ वायव्यमण्डलं बन्ध बन्ध, रक्ष रक्ष, माचल माचल, माक्रम्य माक्रम्य स्वाहा । ॐ हाँ ह्रीं हूँ हैं हौं हः स्वाहा । ॐ क्राँ क्रीं क्रूँ क्रैं क्रौं क्रः स्वाहा । ॐ उत्तरदिशायां नरारूढं गदाहस्तं परिवारसहितं दिग्देवताधिपतिं कुबेरमण्डलं बध्नामि स्वाहा । ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा । ॐ भैरवाय स्वाहा । ॐ नमो गणेश्वराय स्वाहा । ॐ नमो दुर्गायै नमः स्वाहा । ॐ कुबेर-मण्डलं बन्ध बन्ध, रक्ष रक्ष, माचल माचल, माक्रम्य माक्रम्य स्वाहा । ॐ हाँ ह्रीं हूँ हैं हौं हः स्वाहा । ॐ क्राँ क्रीं क्रूँ क्रैं क्रौं क्रः स्वाहा ।

ॐ ईशानदिशायां वृषभारूढं शूलहस्तं परिवारसहितं दिग्देवताधिपतिमीशानमण्डलं बध्नामि स्वाहा । ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा । ॐ भैरवाय स्वाहा । ॐ गणेश्वराय स्वाहा । ॐ नमो दुर्गायै नमः स्वाहा । ॐ ईशानमण्डलं बन्ध बन्ध, रक्ष रक्ष, माचल माचल, माक्रम्य माक्रम्य स्वाहा । ॐ हाँ ह्रीं हूँ हैं हौं हः स्वाहा । ॐ क्राँ क्रीं क्रूँ क्रैं क्रौं क्रः स्वाहा । ॐ अन्तरदिशायां लोष्ठनागारूढं चक्रहस्तं परिवारसहितं दिग्देवताधिपतिं कालाग्निमण्डलं बध्नामि स्वाहा । ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा । ॐ भैरवाय स्वाहा । ॐ गणेश्वराय स्वाहा । ॐ नमो दुर्गायै नमः स्वाहा । ॐ कालाग्निमण्डलं बन्ध बन्ध, रक्ष रक्ष, माचल माचल, माक्रम्य माक्रम्य स्वाहा । ॐ हाँ ह्रीं हूँ हैं हौं हः स्वाहा । ॐ क्राँ क्रीं क्रूँ क्रैं क्रौं क्रः स्वाहा । ॐ ब्रह्मदिशायां हंसारूढं ब्रह्मास्त्रहस्तं स्वपरिवारसहितं दिग्देवताधिपतिं ब्रह्माण्डमण्डलं बध्नामि स्वाहा । ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा । ॐ भैरवाय स्वाहा। ॐ गणेश्वराय स्वाहा । ॐ नमो दुर्गायै नमः स्वाहा । ॐ ब्रह्माण्डमण्डलं बन्ध बन्ध, रक्ष रक्ष, माचल माचल, माक्रम्य माक्रम्य स्वाहा । ॐ हाँ ह्रीं हूँ हैं हौं हः स्वाहा । ॐ क्राँ क्रीं क्रूँ क्रैं क्रौं क्रः स्वाहा । ॐ विष्णुदिशायां

गरुडारूढं गदाहस्तं स्वपरिवारसहितं दिग्देवताधिपतिं विष्णुमण्डलं बध्नामि स्वाहा । ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा । ॐ भैरवाय स्वाहा । ॐ गणेश्वराय स्वाहा । ॐ नमो दुर्गायै नमः स्वाहा । ॐ विष्णुमण्डलं बन्ध बन्ध, रक्ष रक्ष, माचल माचल, माक्रम्य माक्रम्य स्वाहा । ॐ हाँ हीं हूँ हैं हौं हः स्वाहा । ॐ क्राँ क्रीं क्रूँ क्रैं क्रौं क्रः स्वाहा । ॐ अग्निदिशायां कूर्मारूढं लोष्टभागं कुपरिघहस्तं स्वपरिवारसहितं दिग्देवताधिपतिं पातालमण्डलं बध्नामि स्वाहा । ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा । ॐ भैरवाय स्वाहा । ॐ गणेश्वराय स्वाहा । ॐ नमो दुर्गायै नमः स्वाहा । ॐ पातालमण्डलं बन्ध बन्ध, रक्ष रक्ष, माचल माचल, माक्रम्य माक्रम्य स्वाहा । ॐ हाँ हीं हूँ हैं हौं हः स्वाहा । ॐ क्राँ क्रीं क्रूँ क्रैं क्रौं क्रः स्वाहा । ॐ दुर्गे महाशान्तिक-भूत-प्रेत-पिशाच-राक्षस-ब्रह्मराक्षस-बेताल-वृश्चिकभय-विनाशनाय स्वाहा । ॐ पूर्वदिशायां व्रजको नाम राक्षसस्तस्य व्रजकस्याऽष्टादशकोटिसहस्रस्य पिशाचस्य दिशां बध्नामि स्वाहा । ॐ अस्त्राय फट् स्वाहा । ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा । ॐ अग्निदिशायामग्निज्वालो नाम राक्षसस्तस्याऽग्निज्वालस्याऽष्टादशकोटि-सहस्रस्य पिशाचस्य दिशां बध्नामि

स्वाहा । ॐ अस्त्राय फट् स्वाहा । ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा । ॐ दक्षिणदिशायामेकपिङ्गलिको नाम राक्षसस्तस्यैकपिङ्गलिकस्याऽष्टादश-कोटिसहस्रस्य पिशाचस्य दिशां बध्नामि स्वाहा । ॐ अस्त्राय फट् स्वाहा । ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा । ॐ नैर्ऋत्यदिशायां मरीचिको नाम राक्षसस्तस्य मरीचिकस्याऽष्टादश-कोटिसहस्रस्य पिशाचस्य दिशां बध्नामि स्वाहा । ॐ अस्त्राय फट् स्वाहा । ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा ।

ॐ पश्चिमदिशायां मकरो नाम राक्षसस्तस्य मकरस्या-ऽष्टादशकोटिसहस्रस्य पिशाचस्य दिशां बध्नामि स्वाहा । ॐ अस्त्राय फट् स्वाहा । ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा । ॐ वायव्यदिशायां तक्षको नाम राक्षसस्तस्य तक्षकस्याऽष्टादश-कोटिसहस्रस्य पिशाचस्य दिशां बध्नामि स्वाहा । ॐ अस्त्राय फट् स्वाहा । ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा । ॐ उत्तरदिशायां महाभीमो नाम राक्षसस्तस्य भीमस्याऽष्टादशकोटिसहस्रस्य पिशाचस्य दिशां बध्नामि स्वाहा । ॐ अस्त्राय फट् स्वाहा । ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा । ॐ ईशानदिशायां भैरवो नाम

राक्षसस्तस्य भैरवस्याऽष्टादशकोटिसहस्रस्य पिशाचस्य दिशां बध्नामि स्वाहा। ॐ अस्त्राय फट् स्वाहा। ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा। ॐ ब्रह्मदिशायां ब्रह्मरूपो नाम राक्षसस्तस्य ब्रह्मरूपस्याऽष्टादशकोटिसहस्रस्य पिशाचस्य दिशां बध्नामि स्वाहा। ॐ अस्त्राय फट् स्वाहा।

ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा। ॐ नमो भगवते भैरवाय स्वाहा। ॐ नमो गणेश्वराय स्वाहा। ॐ नमो दुर्गायै नमः स्वाहा। ॐ नमो महाशान्तिक-भूत-प्रेत-पिशाच-राक्षस-बेताल-वृश्चिकभय-विनाशनाय स्वाहा।

ॐ शिखायां मे क्लीं ब्रह्माणी रक्षतु। ॐ हाँ हीं ब्रीं ब्लीं क्षौं हुँ फट् स्वाहा। ॐ शिरो मे रक्षतु माहेश्वरी। ॐ हाँ हीं ब्रीं ब्लीं क्षौं हुँ फट् स्वाहा। ॐ भुजौ रक्षतु सर्वाणी। ॐ हाँ हीं ब्रीं ब्लीं क्षौं हुँ फट् स्वाहा। ॐ उदरे रक्षतु रुद्राणी। ॐ हाँ हीं ब्रीं ब्लीं क्षौं हुँ फट् स्वाहा। ॐ जङ्घे रक्षतु नारसिंही। ॐ हाँ हीं ब्रीं ब्लीं क्षौं हुँ फट् स्वाहा। ॐ सर्वाङ्गे रक्षतु सुन्दरी। ॐ हाँ हीं ब्रीं ब्लीं क्षौं हुँ फट् स्वाहा।

परिणामे माहाविद्या महादेवस्य सन्निधौ।
एकविंशतिवारेण पठित्वा सिद्धिमाप्नुयात् ॥१॥
स्त्रियो वा पुरुषो वाऽपि पापं भस्म समाचरेत्।
दुष्टानां मारणं चैव सर्वग्रहनिवारणम्।
सर्वकार्येषु सिद्धिः स्यात् प्रेतशान्तिर्विशेषतः ॥२॥

सर्वमन्त्रकीलनस्तोत्रमन्त्रः

ॐ उग्रं वीरं महाविष्णुं ज्वलन्तं सर्वतोमुखम्।
नृसिंहं भीषणं भद्रं मृत्यु-मृत्युं नमाम्यहम् ॥३॥

फलश्रुति—महादेवजी के समीप इस महाविद्या को इक्कीस बार पाठ करने से साधक परिणाम अर्थात् सभी कार्यों में सिद्धि प्राप्त करता है॥ १॥

स्त्री अथवा पुरुष सभी के पाप भस्म (नष्ट) होते हैं। तथा दुष्ट जनों का मारण, समस्त पापग्रहों का निवारण और समस्त कार्यों में सिद्धि, विशेष कर प्रेतबाधा आदि की शान्ति होती है॥ २॥

कीलनस्तोत्र मन्त्र—'ॐ उग्रं वीरं' से 'मृत्यु-मृत्युं नमाम्यहम्' पर्यन्त मन्त्र पढ़ कर कुशा द्वारा जल छिड़कने से प्रेतबाधा शान्त होती है।

अष्टोत्तरशतमभिमन्त्र्य, जलं पाययेत्[1] ।
वर्षे सप्तनवाङ्केन्दौ श्रीशिवदत्तशर्मणा ।
संशोधनं कृतं चाऽस्य सदा तुष्यतु शङ्करः॥

इति श्रीभैरवीतन्त्रे शिवप्रोक्ता महाविद्या समाप्ता।

श्लोकार्थ— उग्र, वीर, चारों ओर ज्वाला से व्याप्त, महाविष्णु, अति भयंकर, कल्याणकारी नृसिंह एवं मृत्यु के भी मृत्युरूप को मैं नमस्कार करता हूँ॥ ३॥

मैं (श्रीशिवदत्त मिश्र) ने संवत् १९९७ में इस महाविद्या स्तोत्र का संशोधन-सम्पादन किया। इससे भूतभावन भगवान् शङ्कर सदा प्रसन्न हों।

इस प्रकार भैरवीतन्त्र में शिव-द्वारा कहा हुआ, आचार्य पण्डित श्रीशिवदत्तमिश्र शास्त्रीकृत 'शिवदत्ती' हिन्दी-टीका सहित महाविद्या स्तोत्र समाप्त।

१– अष्टोत्तरशतमन्त्रैर्मार्जयेद् बर्हिषेति शेषः।

महाविद्यास्तोत्रम्

महाविद्यामन्त्रः

हुँ श्रीं ह्रीं वज्रवैरोचनीये हुँ हुँ फट् स्वाहा ऐं।

महाविद्याध्यानम्

चतुर्भुजां महादेवीं नागयज्ञोपवीतिनीम् ।
महाभीमां करालास्यां सिद्धिविद्याधरैर्युताम् ॥१॥
मुण्डमालावलीकीर्णां मुक्तकेशीं स्मिताननाम् ।
एवं ध्यायेन्महादेवीं सर्वकामार्थसिद्धये ॥२॥

'हुँ श्रीं ह्रीं' से 'फट् स्वाहा ऐं' तक यह महाविद्या का मन्त्र है।

नागराज की यज्ञोपवीत धारण की हुई, महा भयंकर स्वरूपा, विकराल मुखवाली, सिद्ध एवं विद्याधरों से घिरी हुई, ॥ १ ॥ मुण्डमाला की पंक्ति से व्याप्त (अर्थात् मुण्डमाल धारण की हुई), बिखरे हुए केशवाली, मन्द हास्ययुक्त चार भुजावाली श्रीमहादेवी का, समस्त कामना की सिद्धि के लिए ध्यान करे॥ २॥

शिव उवाच

दुर्लभं तारिणीमार्गं दुर्लभं तारिणीपदम् ।
मन्त्रार्थं मन्त्रचैतन्यं दुर्लभं शवसाधनम् ॥१॥
श्मशान-साधनं योनिसाधनं ब्रह्मसाधनम् ।
क्रियासाधनकं भक्तिसाधनं मुक्तिसाधनम् ।
तव प्रसादाद् देवेशि ! सर्वाः सिध्यन्ति सिद्धयः ॥२॥
नमस्ते चण्डिके चण्डि ! चण्ड-मुण्ड-विनाशिनि ! ।
नमस्ते कालिके ! कालमहाभयविनाशिनि ! ॥३॥

शिवजी ने कहा—हे पार्वति ! भवसागर पार उतारनेवाला मार्ग एवं स्थान, तत्परक चैतन्य मन्त्र और मन्त्रार्थ तथा शव-साधन ये इस संसार में अत्यन्त दुर्लभ हैं॥ १।

हे देवेशि ! श्मशान-साधन, योनि-साधन, ब्रह्म-साधन, क्रिया-साधन, भक्ति-साधन एवं मुक्ति-साधन आदि सभी सिद्धियाँ आपकी कृपा से ही सिद्ध होती हैं॥ २॥

चण्ड-मुण्ड को नष्ट करनेवाली चण्डी रूप चण्डिके ! आपको नमस्कार है। तथा कालके महा भय को विनाश करनेवाली कालिके ! आपको प्रणाम है॥ ३॥

शिवे रक्ष जगद्धात्रि ! प्रसीद हरवल्लभे ! ।
प्रणमामि जगद्धात्रीं जगत्पालनकारिणीम् ॥४॥
जगत्-क्षोभकरीं विद्यां जगत्सृष्टि-विधायिनीम् ।
करालां विकटां घोरां मुण्डमाला-विभूषिताम् ॥५॥
हरार्चितां हराराध्यां नमामि हरवल्लभाम् ।
गौरीं गुरुप्रियां गौरवर्णालङ्कारभूषिताम् ।
हरिप्रियां महामायां नमामि ब्रह्मपूजिताम् ॥६॥

हे जगद्धात्रि-शिवे ! आप मेरी रक्षा करें। हे शिवप्रिये ! आप मुझपर प्रसन्न हों। तीनों लोकों को पवित्र करनेवाली, संसार की माता को प्रणाम करता हूँ॥ ४॥

जगत् में क्षोभ (दु:ख) उत्पन्न करनेवाली, संसार की उत्पत्तिकारिका, कराल, विकट, घोर, मुण्डमाला से विभूषित ऐसी विद्या हैं॥ ५॥

शिवप्रिया, महेश्वर-द्वारा पूजित, गुरुप्रिया, गौर वर्णवाली, अत्यन्त सुन्दरी, नाना प्रकार के अलङ्कारों से विभूषित, गौरी को मैं नमस्कार करता हूँ। एवं चार मुखवाले ब्रह्मा द्वारा पूजित, हरिप्रिया महामाया को मैं प्रणाम करता हूँ॥ ६॥

सिद्धां सिद्धेश्वरीं सिद्ध-विद्याधरगणैर्युताम् ।
मन्त्रसिद्धिप्रदां योनिसिद्धिदां लिङ्गशोभिताम् ।
प्रणमामि महामायां दुर्गां दुर्गति-नाशिनीम् ॥७॥
उग्रामुग्रमयीमुग्र-तारामुग्रगणैर्युताम् ।
नीलां नीलघनश्यामां नमामि नीलसुन्दरीम् ॥८॥
श्यामाङ्गीं श्यामघटितां श्यामवर्णविभूषिताम् ।
प्रणमामि जगद्धात्रीं गौरीं सर्वार्थसाधिनीम् ॥९॥
विश्वेश्वरीं महाघोरां विकटां घोरनादिनीम् ।
आद्यामाद्या-गुरोराद्यामाद्यनाथ-प्रपूजिताम् ॥१०॥

सिद्धरूपा, सिद्धेश्वरी, सिद्ध-विद्याधरों से घिरी हुई, मन्त्रसिद्धि एवं योनिसिद्धि-प्रदायिनी, लिंग से सुशोभित, दुर्गति विनाशिनी महामाया दुर्गा को मैं प्रणाम करता हूँ ॥७॥ उग्रगणों से युक्त, उग्रमयी, अति भयंकर रूप, ऐसी उग्र तारा देवी को मैं प्रणाम करता हूँ। कृष्ण वर्णवाले, मेघ के समान श्याम एवं नील स्वरूप वाली नील सुन्दरी देवी को मैं नमस्कार करता हूँ ॥८॥ श्यामाङ्गी, अत्यन्त कृष्ण वर्णवाली, श्यामस्वरूपा, सभी मनोरथों को सिद्ध करने वाली, जगत् की माता गौरी देवी को मैं प्रणाम करता हूँ ॥९॥ महाघोररूपा, अत्यन्त विकट (भयंकर), घोर शब्द करनेवाली, आद्यनाथ (शिव) से पूजित, आशुतोष भगवान् शंकर की

महा. २२ स्तोत्र. २२

श्रीदुर्गां धनदामन्नपूर्णां पद्मां सुरेश्वरीम् ।
प्रणमामि जगद्धात्रीं चन्द्रशेखर-वल्लभाम् ॥११॥
त्रिपुरासुन्दरीं बालामबलागण-भूषिताम् ।
शिवदूतीं शिवाराध्यां शिवध्येयां सनातनीम् ॥१२॥
सुन्दरीं तारिणीं सर्वशिवागण-विभूषिताम् ।
नारायणीं विष्णुपूज्यां ब्रह्म-विष्णु-हरप्रियाम् ॥१३॥
सर्वसिद्धिप्रदां नित्यामनित्यगुणवर्जिताम् ।
सगुणां निर्गुणां ध्येयामर्चितां सर्वसिद्धिदाम् ॥१४॥

गुरुरूपा, श्रीदुर्गारूपा, आद्या देवी को मैं पुनः-पुनः प्रणाम करता हूँ ॥१०॥ धनप्रदायिनी कमल से उत्पन्न, जगन्माता, चन्द्रशेखर (शिव) प्रिया, अन्नपूर्णा को मेरा बार-बार नमस्कार है ॥११॥

अबला गणों से विभूषित, बाला त्रिपुरसुन्दरी को प्रणाम करता हूँ–शिव द्वारा पूजित, शंकर की एकमात्र ध्येयरूपा, सनातनी, ॥१२॥ समस्त शिवागणों से विभूषित, भवतारिणी, अत्यन्त सुन्दरी, शिवदूती को मैं प्रणाम करता हूँ। विष्णु की पूज्यरूपा, ब्रह्मा-विष्णु-महेश की प्रिया, ॥१३॥ सभी सिद्धियों को देने वाली, अनित्य गुणों से रहित, सर्वदा नित्यरूप तथा सगुण-निर्गुणरूप, समस्त देवों द्वारा ध्येय एवं पूजित नारायणी देवी को मैं प्रणाम करता हूँ ॥१४॥

महा २३ स्तोत्र. २३

दिव्यां सिद्धिप्रदां विद्यां महाविद्यां महेश्वरीम् ।
महेशभक्तां माहेशीं महाकाल-प्रपूजिताम् ।
प्रणमामि जगद्धात्रीं शुम्भासुर-विमर्दिनीम् ॥१५॥
रक्तप्रियां रक्तवर्णां रक्तबीज-विमर्दिनीम् ।
भैरवीं भुवनां देवीं लोलजिह्वां सुरेश्वरीम् ॥१६॥
चतुर्भुजां दशभुजामष्टादशभुजां शुभाम् ।
त्रिपुरेशीं विश्वनाथप्रियां विश्वेश्वरीं शिवाम् ॥१७॥
अट्टहासामट्टहासप्रियां धूम्रविनाशिनीम् ।
कमलां छिन्नभालां च मातङ्गीं सुरसुन्दरीम् ॥१८॥

सिद्धिप्रदान करनेवाली, शिवकी अत्यन्त प्रिय, महाकाल द्वारा पूजित, माहेशी रूप, शुम्भासुरनाशिनी, लोकमाता, दिव्य विद्यारूप महाविद्याको प्रणाम करता हूँ॥ १५॥ लपलपाती जिह्वावाली, सुरेश्वरी, रक्तप्रिया, लालरंगवाली, रक्तबीज नामक असुरको नष्ट करनेवाली, भुवनेशी देवी भैरवी को मैं नमस्कार करता हूँ॥ १६॥

चार, दश एवं अठारह भुजावाली, अपने भक्तों को शुभ फल देने वाली, विश्वेश्वरी, शिवा, विश्वनाथप्रिया, त्रिपुरेशी को मैं प्रणाम करता हूँ॥ १७॥ धूम्रासुर दैत्यको विनाश करने वाली, अट्टहास-प्रिय, छिन्नमस्ता, मातङ्गी, सुरसुन्दरी, ॥ १८॥

षोडशीं विजयां भीमां धूम्रां च बगलामुखीम् ।
सर्वसिद्धिप्रदां सर्व-विद्यामन्त्र-विशोधिनीम् ।
प्रणमामि जगत्तारां सारां च मन्त्रसिद्धये ॥१९॥
इत्येवं च वरारोहं स्तोत्रं सिद्धिकरं परम् ।
पठित्वा मोक्षमाप्नोति सत्यं वै गिरिनन्दिनि! ॥२०॥
कुजवारे चतुर्दश्याममायां जीववासरे ।
शुक्रे निशिगते स्तोत्रं पठित्वा मोक्षमाप्नुयात् ।
त्रिपक्षे मन्त्रसिद्धिः स्यात् स्तोत्रपाठाद्धि शङ्करि! ॥२१॥

षोडशी, विजया, भीमा, धूम्रा, बगलामुखी, समस्त विद्या-मन्त्रों की सिद्धि प्रदान करने वाली, मन्त्र-सिद्धि के लिए संसार की सारभूत तारा आदि देवियों को मैं प्रणाम करता हूँ॥ १९॥

फलश्रुति— हे गिरिनन्दिनि पार्वती! जो साधक-गण, परम सिद्धि-प्रदायक इस महाविद्या स्तोत्र का पाठ करते हैं, वे निश्चय ही परम-पद (मोक्ष) को प्राप्त कर लेते हैं॥ २०॥

जो सिद्ध-साधक चतुर्दशी, मंगलवार, अमावस्या, गुरुवार और शुक्रवार की रात्रि में पाठ करते हैं, वे निश्चय ही मोक्ष पद को प्राप्त करते हैं। हे शंकरि, तीन पक्ष में इस स्तोत्र के पाठ से निश्चय ही मन्त्र-सिद्धि होती है॥ २१॥

चतुर्दश्यां निशाभागे शनि-भौमदिने तथा ।
निशामुखे पठेत् स्तोत्रं मन्त्रसिद्धिमवाप्नुयात् ॥२२॥
केवलं स्तोत्रपाठाद्धि मन्त्रसिद्धिरनुत्तमा ।
जागर्ति सततं चण्डी स्तोत्रपाठाद् भुजङ्गिनी ॥२३॥

इति मुण्डमालातन्त्रे महाविद्यास्तोत्रं सम्पूर्णम् ।

चतुर्दशी के मध्य रात्रि में तथा शनि एवं मंगलवार के सायंकाल में पाठ करने से निश्चय ही मन्त्र-सिद्धि होती है ॥ २२ ॥

केवल इस महाविद्या स्तोत्र के पाठ मात्र से ही भली-भाँति मन्त्रसिद्धि होती है। तथा भुजंगिनी एवं चण्डी रूप दशमहाविद्या के स्तोत्र-पाठ से मन्त्र जागृत होता है ॥ २३ ॥

इति आचार्य पण्डित शिवदत्तमिश्र शास्त्री कृत हिन्दी टीका सहित मुण्डमालातन्त्रोक्त महाविद्यास्तोत्र समाप्त।

महाविद्याकवचम्

भैरव उवाच

श्रृणु देवि ! प्रवक्ष्यामि कवचं सर्वसिद्धिदम् ।
आद्याया महाविद्यायाः सर्वाभीष्ट-फलप्रदम् ॥१॥
कवचस्य ऋषिर्देवि ! सदाशिव इतीरितः ।
छन्दोऽनुष्टुब् देवता च महाविद्या प्रकीर्तिता ।
धर्मा-ऽर्थ-काम-मोक्षाणां विनियोगश्च साधने ॥२॥
ऐंकारः पातु शीर्षे मां कामबीजं तथा हृदि ।
रमाबीजं सदा पातु नाभौ गुह्ये च पादयोः ॥३॥

भैरव ने कहा– हे देवि ! सम्पूर्ण अभीष्ट फल को देने वाले , आद्यामहाविद्या के कवच का निरूपण करता हूँ, उसे सावधान पूर्वक सुनो ॥ १ ॥ हे देवि ! इस कवच के सदाशिव ऋषि , अनुष्टुप् छन्द ,महाविद्या देवता , धर्म , अर्थ , काम एवं मोक्ष की सिद्धि केलिए हाथ में जल लेकर विनियोग करे ॥ २ ॥ ऐंकार मेरे मस्तक (सिर) की , कामबीज हृदय की , नाभि , गुप्तांग एवं दोनों चरणों की रमाबीज रक्षा करें ॥ ३ ॥

ललाटे सुन्दरी पातु उग्रा मां कण्ठदेशतः।
भगमाला सर्वगात्रे लिङ्गे चैतन्यरूपिणी ॥४॥
पूर्वे मां पातु वाराही ब्रह्माणी दक्षिणे तथा।
उत्तरे वैष्णवी पातु चेन्द्राणी पश्चिमेऽवतु ॥५॥
माहेश्वरी च आग्नेय्यां नैर्ऋते कमला तथा।
वायव्यां पातु कौमारी चामुण्डा हीशकेऽवतु ॥६॥
इदं कवचमज्ञात्वा महाविद्यां च यो जपेत्।
न फलं जायते तस्य कल्पकोटिशतैरपि ॥७॥

इति रुद्रयामले महाविद्याकवचं समाप्तम्।

सुन्दरी मेरे ललाट की, उग्रा मेरे कण्ठ की, समस्त शरीर की भगमाला तथा चैतन्य रूपिणी मेरे लिङ्ग की रक्षा करें॥ ४॥ इसी प्रकार पूर्व दिशा में वाराही, दक्षिण में ब्रह्माणी, उत्तर दिशा में वैष्णवी एवं पश्चिम में इन्द्राणी मेरी रक्षा करें॥ ५॥ आग्नेय दिशा में माहेश्वरी, नैर्ऋत्य (नैऋतिकोण) में कमला, वायव्य में कौमारी तथा ईशान में चामुण्डा मेरी रक्षा करें॥ ६॥

फलश्रुति—न्यास-ध्यान सहित इस कवच पाठ के बिना जो साधक आद्या महाविद्या का जप करता है, उसकी सिद्धि सैकड़ों एवं करोड़ों वर्ष में भी नहीं होती है॥ ७॥

इस प्रकार आचार्य पण्डित शिवदत्तमिश्र शास्त्री-कृत हिन्दी-टीका सहित रुद्रयामल तन्त्रोक्त महाविद्याकवच समाप्त।

महाविद्या होम - सामग्री

ॐ कं	स्वाहा	गूलर से	ॐ जं	स्वाहा	कुशा
ॐ कं कं	स्वाहा	गूलर से	ॐ ञं ञं	स्वाहा	कुशा
ॐ खं	स्वाहा	चिचिड़ी (अपामार्ग) से	ॐ टं	स्वाहा	सफेद दूब
ॐ खं खं	स्वाहा	चिचिड़ी (अपामार्ग) से	ॐ टं टं	स्वाहा	सफेद दूब
ॐ गं	स्वाहा	खैर (खदिर) से	ॐ ठं	स्वाहा	मालती
ॐ गं गं	स्वाहा	खैर (खदिर) से	ॐ ठं ठं	स्वाहा	मालती
ॐ घं	स्वाहा	पाकड़ की लकड़ी	ॐ डं	स्वाहा	वेलपत्र
ॐ घं घं	स्वाहा	पाकड़ की लकड़ी	ॐ डं डं	स्वाहा	वेलपत्र
ॐ ङं	स्वाहा	बरगद	ॐ ढं	स्वाहा	मदार फूल
ॐ ङं ङं	स्वाहा	बरगद	ॐ ढं ढं	स्वाहा	मदार फूल
ॐ चं	स्वाहा	पीपल	ॐ णं	स्वाहा	पलास फूल
ॐ चं चं	स्वाहा	पीपल	ॐ णं णं	स्वाहा	पलास फूल
ॐ छं	स्वाहा	पलास	ॐ तं	स्वाहा	तिल
ॐ छं छं	स्वाहा	पलास	ॐ तं तं	स्वाहा	तिल
ॐ जं	स्वाहा	मदार	ॐ थं	स्वाहा	बारा (वटक)
ॐ जं जं	स्वाहा	मदार	ॐ थं थं	स्वाहा	बारा (वटक)
ॐ झं	स्वाहा	आम	ॐ दं	स्वाहा	चावल चूर्ण
ॐ झं झं	स्वाहा	आम	ॐ दं दं	स्वाहा	चावल चूर्ण

ॐ धं	स्वाहा	गेहूँ के आटा	ॐ रं	स्वाहा	जव
ॐ धं धं	स्वाहा	गेहूँ के आटा	ॐ रं रं	स्वाहा	जव
ॐ नं	स्वाहा	सेंधा नमक	ॐ लं	स्वाहा	सेंधा नमक
ॐ नं नं	स्वाहा	सेंधा नमक	ॐ लं लं	स्वाहा	सेंधा नमक
ॐ पं	स्वाहा	उरद, दही	ॐ वं	स्वाहा	गुग्गुल
ॐ पं पं	स्वाहा	उरद , दही	ॐ वं वं	स्वाहा	गुग्गुल
ॐ फं	स्वाहा	उरद, दही	ॐ शं	स्वाहा	पीली सरसो
ॐ फं फं	स्वाहा	उरद, दही	ॐ शं शं	स्वाहा	पीली सरसो
ॐ बं	स्वाहा	पीली सरसो	ॐ षं	स्वाहा	उरद, दही
ॐ बं बं	स्वाहा	पीली सरसो	ॐ षं षं	स्वाहा	उरद, दही
ॐ भं	स्वाहा	जामुन की लकड़ी	ॐ सं	स्वाहा	तिल
ॐ भं भं	स्वाहा	जामुन की लकड़ी	ॐ सं सं	स्वाहा	तिल
ॐ मं	स्वाहा	मुलहठी	ॐ हं	स्वाहा	गुड़
ॐ मं मं	स्वाहा	मुलहठी	ॐ हं हं	स्वाहा	गुड़
ॐ यं	स्वाहा	दही, उरद	ॐ क्षं	स्वाहा	जव
ॐ यं यं	स्वाहा	दही, उरद	ॐ क्षं क्षं	स्वाहा	जव

विशेष— होम-सामग्री में स्वरों के लिए अभी तक हमें कोई मूल प्राप्त नहीं हुआ है। मात्र व्यञ्जनों के लिए ही जितना अंश प्राप्त हुआ है उसी का निर्देश किया गया है।

भूत-प्रेत आदि समस्त विघ्न-बाधाओं को झाड़ने का मन्त्र

ॐ ऐं श्रीं ह्रां ह्रीं ह्रूं स्फ्रें ख्फ्रें ह्सौं ह्स्ख्फ्रें ह्सौं ॐ नमो हनुमते महाबलपराक्रम मम परस्य च भूत-प्रेत-पिशाच-शाकिनी-डाकिनी-यक्षिणी-पूतना-मारी-महामारी-कृत्या-यक्ष-राक्षस-भैरव-वेताल-ग्रह-ब्रह्मग्रह-ब्रह्मराक्षसादिकजात-क्रूरबाधान् क्षणेन हन हन जृम्भय जृम्भय निरासय निरासय वारय वारय बन्धय बन्धय नुद नुद सूद सूद धुनु धुनु मोचय मोचय मामेनं च रक्ष रक्ष महामाहेश्वर रुद्रावतार हाहाहा हूंहूंहूं हुंहुंहुं घेघेघे हूं फट् स्वाहा।

***प्रयोगविधि—**श्रीहनुमान् जी का मानसिक ध्यान कर भूत-प्रेत आदि बाधाग्रस्त रोगी पर उपर्युक्त मन्त्र को पढता हुआ सरसों का दाना फेंकने से भूत-प्रेत-पिशाचादि से उत्पन्न सभी बाधाएँ शीघ्र नष्ट हो जाती हैं।*

सभी रोगों को झाड़ने का मन्त्र

ॐ ऐं श्रीं ह्रां ह्रीं ह्रूं स्फ्रें ख्फ्रें ह्सौं ह्स्ख्फ्रें ह्सौं ॐ नमो हनुमते मम परस्य च क्षय-कुष्ठ-गण्डमाला-स्फोटकं क्षतज्वरमैकाहिकं द्व्यहिकं त्र्याहिकं चातुर्थिकं सन्ततज्वरं सान्निपातिकज्वरं भूतज्वरं मन्त्रज्वर-शूल-भगन्दर-मूत्रकृच्छ्र-कपालशूल-कर्णशूला-ऽक्षिशूलोदरशूल-हस्तशूल-पादशूलादीन् सर्वव्याधीन् क्षणेन भिन्धि भिन्धि छिन्धि छिन्धि नाशय नाशय निकृन्तय निकृन्तय छेदय छेदय भेदय भेदय महावीर हनुमन् ह्रांह्रां घेघे ह्रींह्रीं हूं-हूं फट् स्वाहा।

***प्रयोगविधि—** शनिवार एवं मंगलवार के दिन हनुमान् जी का मानसिक ध्यान और प्रणाम कर कुशा अथवा चाकू से इस मन्त्र को पढ़ते हुए रोगी को झाड़ने से सभी रोग समूल नष्ट हो जाते हैं।*